भारतीय स्त्री के उद्धारक : डॉ. अम्बेडकर

–डॉ. डब्ल्यू. मायादेवी

भारतीय समाज रचना विषमतावादी व्यवस्था है। इस व्यवस्था में समाज के बहुत बडेहिस्से को जान–बुझकर दबाया गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे देश का वह हिस्सा सभी क्षेत्रों में आज भी पिछडा है। वह कौनसा हिस्सा है? जो सारे क्षेत्रों में आज भी पिछडा है। वह हिस्सा है 1.स्त्री वर्ग 2. दलित वर्ग। यहाँ कि ब्राम्हणवादी व्यवस्था ने समाज का आधा हिस्सा स्त्री वर्ग और दलितों को अपनी धार्मिक व्यवस्था के माध्यम से दुर्बल और पशुसम बना दिया। उनके प्रगति के सारे रास्ते बंद कर दिए। इन दो वर्गों के तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसमें से स्त्री वर्ग की स्थिति इतनी निम्न नहीं थी जितनी आज है। इतिहास में जाकर अगर हम देखेंगे तो पता चलेगा कि प्राचीन काल में स्त्रियों का सामाजिक दर्जा ऊंचे स्थान पर था। बाद के समय उसे नीचे ढकेल दिया गया। कहा जाता है कि प्राचीन काल में स्त्रियाँ राजनीति में थी या नहीं किन्तु देश में बौद्धिक और सामाजिक जीवन में स्त्रियों का दर्जा बहुत उच्च स्थान का था। इस संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर बताते है कि – "लडकी की ब्रम्हाचर्यावस्था समाप्त हुई है और वह अब विवाह योग्य हुई है, ऐसा उल्लेख अथर्व वेद में मिलता है"

इससे यही स्पष्ट होता है कि पूर्वकाल में स्त्रियों का उपनयन विधी किया जाता था। श्रोत सूत्र केउल्लेख से पता चलता है कि स्त्रियाँ वेद के मंत्र बोलती थी। वह वेदाभ्यास तक करती थी। ऐसा पाणिनी के अष्टाध्याय ग्रंथ से पता चलता है। गुरुकुल में स्त्रियाँ अध्यापक का काम भी करती थी। वह विद्यार्थीनियों को वेद पढाती थी। यह सब पतजंलि के भाष्य से दिखाई देता है । धर्म, तत्वज्ञान, विश्व की उत्पत्ती, ज्ञान विकास इत्यादि गहन और जटिल विषयों पर पुरुषों के बराबर वादविवाद करने वाली स्त्रियाँ होती थी।" प्राचीन काल में जो स्त्रियाँ इतनी विद्वान थी वह एकदम कैसे निम्न स्थिति को पहुँची? जिस समय स्त्रियों को इतना मान–सम्मान था बाद में उसके प्रगति के सारे रास्ते कैसे बंद हो गए? तो कहना पड़ेगा कि यहाँ के हिन्दू धर्म के कानून बनानेवाले मनु के कारण इसमें कोई शंका नही। मनु ने 'मनुस्मृति' के माध्यम से यहां का आधा हिस्सा स्त्रियों के लिए बहुत ही घिनौने कानून बनाए। स्त्रियों के जीवन संबंधी कायदों को लिखकर रखा। मनु स्त्रियों के संदर्भ में कहता है –" स्त्रियों को बचपन में पिता के अधीन रहना चाहिए। यौवन में पति के अधीन और बुढापे में पुत्र के अधीन रहना चाहिए।" (मनुस्मृति 5–148) इतना ही नही बल्कि स्त्रियों के प्रति उसके विचार बहुत ही घिनौने दिखाई देते है। वह कहता है–" स्त्रियों को पुरुषों का इतना आकर्षण होता है कि पति उन पर कितना भी कडक पहारा रखने दो, फिर भी वह स्वभाव से चंचल और निर्दयी होने के कारण पर–पुरुषों के साथ व्यभिचार करती है और पति का विश्वासघात करती है।" इस प्रकार के घिनौने विचार से मनु ने स्त्रियों को सभी क्षेत्र से दूर ढकेल दिया। मनु के इस प्रकार के विचार सभी

जातियों की स्त्रियाँ जो समाज का आधा हिस्सा है, पर जबरदस्ती से लागु करवाए। स्त्रियों का काम केवल चुल्हा और बच्चे पैदा करने तक सीमित कर दिया। उसे पढने का अधिकार नहीं था या राजनीति में भाग लेने का अधिकार था न समाज का कोई अच्छा कार्य करने का अधिकार था। उसका काम केवल उस घर के पुरुष की दासी बनकर पूरे घर का काम करना और बच्चों को संभालना था। घर में भी उसे दुयम्म दर्जा दिया था। इतना ही नहीं बल्कि समाज में उसे दुय्यम दर्जा दिया जाता था।

कहा जाता है कि इस देश में साधु–संतो की महान परंपरा रही है ऐसा बताया जाता है किन्तु किसी ने भी उसके तरफ ध्यान नहीं दिया। उल्टा उसे 'नरक का द्वार' कहा गया इतना ही नहीं इस देश के महान संत तुलसीदास ने उसे 'ढोल गंवार शूद्र पशू नारी। य सकल ताडन के अधिकारी' कहते हुए उनके विचारों को लोगों के सामने रखा। यहां अनेक सारे महान संत हुए किन्तु स्त्री मुक्ती का किसी ने मार्ग नहीं बताया। इस देश में समाज–सुधारक की भी महान परंपरा निर्माण हुई किसी ने उसके तरफ नहीं देखा। महाराष्ट्र में आगरकर, फुले ने इस तरफ ध्यान दिया। गोपाल गणेश आगरकर ने इस समस्या की ओर देखा किन्तु अल्पकाल में ही वह मृत्यु को प्राप्त हुए। न्या. रानडे, लोकहितवादी, लोकमान्य टिळक, आदि जै, महान नेताओंने, सुधारकों ने स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार माना किन्तु स्त्री समस्या पर चोट नही कि। उसी समय ज्योतिराव फूले जैसे महान सुधारक अपने अचाक–विचार से स्त्री मुक्ती के आद्यप्रवर्तक माने गए। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पहले शिक्षा दी और बाद में सभी निम्न जातियों की स्त्रियों को शिक्षा दिलायी। इतना ही नहीं बल्की सवर्ण स्त्रियों के लिए भी पाठशालाएँ खोली। भारतीय स्त्री की समस्या की ओर देखने वाले पहले समाज–सुधारक महात्मा फुले हुए और पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले हुई इसलिए उन्हे पहिली महिला शिक्षिका होने का गौरव दिया जाता है। फुले के विचारों पर चलनेवाले भारतरत्न प. पू. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर नारी मुक्ति के लिए लडनेवाले पहले क्रांतिकारी सिपाई थे। फुले के प्रेरणा से डॉ. अम्बेडकर प्रभावित थे इसिलए वह अपने पत्नी को लिखे हुए पत्र में कहते है–"मैं नारी की उन्नति के लिए और नारी मुक्ती के लिए लढनेवाला एक योद्धा हूँ। स्त्रियों की प्रतिष्टा बढाने हेतु आवश्यक संघर्ष भी किया, जिसका मुझे अभीमान है।"

डॉ. अम्बेडकर के विचारों में केवल दलित स्त्री ही नहीं थी बल्कि सभी हिन्दूस्त्रियों के उत्थान के लिए 'हिन्दू कोड बील' की रचना उन्होंने की। इस बील को लागु करते समय अनेक लोगों का विरोध हुआ। फिर भी न डरते हुए उसका सामना किया। हिन्दू कोड बील की अवहेलना हो रही है इस बात को वे बर्दाश्त नहीं कर पाए परिणाम यह हुआ कि तत्काल मजूरमंत्री पद को राजीनामा दिया। इसी कारण उनके आंदोलन में स्त्री मुक्ती को प्राधान्य दिया गया। डॉ. अम्बेडकर को यहां के दलित स्त्रियों के प्रति बहुत अभिमान भरा हुआ था इसलिए उहोंने 'भगवान बुद्ध आणि त्यांचा धम्म' इस ग्रंथ की रचना करके दलित स्त्री को आचरण करने की नई दिशा बताई। डॉ.

अम्बेडकर का कहना था कि स्त्री का काम केवल खाना पकाना और बच्चों को जन्म देना, पुरुष की दासी बनना नही है। वह एक शक्ती भी है। वह ऐसी शक्ती है जो धैर्यवान महामेरु को जन्म देती है। उसके अतर्गत के गुणों को पहचानकर अगर उसे विकास की नई नई दिशाएँ अगर उसे प्राप्त होती है तो वह प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ सकती है, इस बात को डॉ. अम्बेडकर ने बताया था। डॉ. अम्बेडकर जब कभी स्त्रियों को उपदेश देते थे उस समय उन्हें खुद को बदलने का मार्गदर्शन करते थे। सामाजिक समता पर आधारित आंदोलन पर स्त्री पुरुष समानता पर जितना बल फुले ने दिया उनता ही बल हिन्दू कोड बिल के रूप में डॉ. अम्बेडकर ने दिया। डॉ. अम्बेडकर के आंदोलन में स्त्री को प्रमुख स्थान दिया और स्त्री ही दलित समाज का उद्धार करेगी ऐसा उनका मानना था। दलित स्त्री को कर्मकांड, अंधविश्वास आदी से दूर करना चाहते थे इसलिए अपने भाषण में वह महिलाओं को कहते थे–"आप आपके बच्चों को पढाओ, अच्छा रहन–सहन सिखो। गले में बहुत सारी कांच की मालाएँ मत पहनो। सिर्फ कालि मणि की एक माला पहनो। हाथ में चुडियाँ हाथ भर मत पहनो। फटे हुए कपडे होने पर साफ धोकर पहनो।'' इस तरह डॉ. अम्बेडकर जैसे प्रज्ञावंत को स्त्री वर्ग का अन्याय चुप बैठने नहीं देता था। उन्होंने जो भाषण दिए उसमें केवल उपदेश ही नहीं होता था बल्कि स्त्रियों में क्रांति निर्माण होना और परिवर्तन निर्माण होना, नवचैतन्य निर्माण होना इसके लिए ही प्रयत्न करते थे। हिन्दु कोड बिल के रूप में समान हक्क और दर्जा मिलने पर, कायदेनुसार स्त्री– दास्य का विमोचन किया।

डॉ. अम्बेडकर के स्त्री विषयक कार्य केवल उनके दलित बहनों तक ही सिमीत न थे बल्कि इस देश के तमाम हिन्दू स्त्री के उद्धार के संदर्भ में भी थे। उनका जन्म अस्पृश्य जाति में हुआ इतने बात पर ही हिन्दुओं को नहीं सोचना चाहिए बल्कि 'हिन्दू कोडबील' को भी देखना चाहिए जिसमें सभी जाति के स्त्रियों की भलायी है। उन्होंने देवदासी व्यभिचारी प्रथा का भी विरोध किया उस प्रथा को नष्ट कराने के लिए भी प्रयत्न किए। देवदासी निर्मुलन के लिए सर्व प्रथम डॉ. अम्बेडकर ने ही आवाज उठायी थी। गिरणीमजूर, बिडी बनानेवाली, कष्टकरी, स्त्रियों के वेतन, शोषण को रोककर उनके लिए अनेक सवलतों का कायदा तयार किया। यह सभी कार्य स्त्रीवर्ग को उच्चपदस्थ करने के लिए किए थे। स्त्री वर्ग पर अनंत उपकार किए इसलिए वह केवल दलितों के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण स्त्रियों के उन्नती के लिए लढणेवाले स्मृतिकार है।

डॉ. अम्बेडकर ने दलित स्त्री में आत्माभिमान जागृत करने के लिए अनेक बार फटकारा और उन्हें वास्तविकता को बताया। महाड संग्राम के समय डॉ. अम्बेडकर ने दलित स्त्रियों से कहा था–" तुम्हारे कोख में जन्म लेना पाप समझा जाता है। तुम सत्याग्रह में भाग लोगी या नहीं यह पहले निश्चित करो। तुम हमारी माँ, बहनें हो हमें हीन कहकर जो यातनाएँ दी जाती है वह तुम्हें मालुम है ही। हमें लोग हीन कहते है उस समय तुम्हें अच्छा लगता है क्या? हमारी उन्नती के लिए तुम्हे लढणा होगा। तुम्हारे बच्चों को शिक्षा दो। पति या बाप दारू पीकर अगर घर में

आते है तो उन्हें अंदर मत लो। खाना मत दो।" इस तरह के विचारों का दलित स्त्रियों पर गहरा प्रभाव पडने लगा था।

अखिल भारतीय दलित परिषद का तिसरा अधिवेशन नागपुर में 18,19,20 जुलै 1942 केदिन संपन्न हुआ था। उस समय बताया जाता है कि उस अधिवेशन में 20–25 हजार स्त्रियाँ आयी थी उन्हें देखकर डॉ. अम्बेडकर बहुत ही हर्षित हुए थे। उस समय उन्होंने कहा था–"किसी भी समाज का मूल्यमापन अगर करना हो तो उस समाज कि स्त्रियों की प्रगति को देखना होगा तभी उस समाज की प्रगति कितनी हुई है उसका अदांज लगा सकते है। आप इतनी बडी संख्या में यहां आयी हो इसलिए हमारा समाज निश्चित तौर पर प्रगतिपथ पर है इसमें शंका नहीं है।" स्त्रियों को कैसै रहना चाहिए क्या करना चाहिए आगे इसे वे बताते है–" आप साफ रहो सभी दुर्गुणों से दूर रहो। बच्चों को पढाकर ज्ञानी बनाओ। बच्चों के विवाह की जल्दीबाजी मत करो। उन्हें उनके पैरों पर खडे रहने जैसा स्वावलंबी बनाओ मेरा यह संदेश ध्यान में रखोगी तो तुम खुद की भी उन्नती कर सकती हो।" डॉ. अम्बेडकर के इसी विचार से आज हम आगे बढ रहे है।

जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चों को सलाह देती है उसी प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने हमें सलाह दी है, प्यार दिया है। जिसने भी उनके विचारों को माना है निश्चित तौर पर आज वे प्रगतिपथ पर निकल चुके है इसलिए डॉ. अम्बेडकर दलित स्त्रियों के पिता ही नहीं वह हमारी माँ भी है। उन्होंने स्त्रियों के समानता पर ज्यादा बल दिया है। स्त्रियों को हमेशा मातृत्व प्रदान करानेवाले पुरुषों को थोडी समज दिलाने हेतु, देश की बढती हुई लोकसंख्या पर नियंत्रण कराने के लिएस्त्रियों की दुर्बलता नष्ट होकर उसे भी समाज में मान–सन्मान से रहने आना, उसे आनंद और सुख प्राप्त होना आदि विचारों को उन्होंने बताया और उसके उपर सोलुशन बताया वह था 'कुटुंब नियोजन' करना। यह सब बातें बताने वाले भारतदेश के एकमेव राजनैतिक नेता केवल डॉ. अम्बेडकर ही थे। लेकिन यहां के हिन्दुवादी पुरुषों को यह बात अच्छी नहीं लगी और इस बात का विरोध करना शुरु हुआ और वे कहने लगे " बच्चे तो भगवान की देन है, आत्मसंयम से कुटूंब नियंत्रन साध्य हो सकता है इस तरह की संभावनाओं को बताने लगे। 50–60 साल पहले

डॉ. अम्बेडकर ने जिन विचारों को बहुत ही प्रभावी ढंग से बताया था उसका आज प्रभाव पडता हुआ दिखाई दे रहा है, इसी कारण आज टी. व्ही. से लेकर गली गली के दीवारों पर कुछ वाक्य झलकते है 'हम दो हमारे दो' लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि कुछ स्वार्थीदल अपना हिन्दुकरण बढाने हेतु कहते हु दिखाई देते है 'हम दो हमारे तीन' । आखिर ऐसा कहने की नौबत क्यों आयी होगी? क्योंकि हिन्दुओं को अब डर लग रहा है कि उनकी जनसंख्या कम होगी तो उनका राज्य नहीं चलेगा शायद यही होगा। डॉ. अम्बेडकर को लगता था कि भंगी, चमार, विणकर आदी स्त्रियों को उनके व्यवसाय से मुक्त होना चाहिए इसलिए उन्होंने चाहा था कि भारत

का औद्योगिकीकरण हो। मुख्य उद्योगों का राष्ट्रियकरण होना चाहिए। इसलिए वे अपने दलित समाज को कहते थे 'शहर की ओर चलो।' इसके पीछे उनका यही विचार था कि शहर में अनेक व्यवसाय मिलने की संभावना होती है और 'अस्पृश्यता' के लिए भी स्थान नहीं होगा। लेकिन ठीक इस बात के विपरीत महात्मा गांधी का दृष्टिकोण दिखाई देता है वह कहते है कि "गाँव की ओर चलो" यह इन दो नेताओं में अन्तरविरोध दिखाई देता है। डॉ. अम्बेडकर को स्त्री वर्ग का आदर बहुत था इसलिए बार–बार उसे उन्होंने व्यक्त किया। 'समाज उन्नति' के लिए समाज का आधा हिस्सा स्त्रियाँ बहुत मुल्यवान है ऐसा वे मानते थे। आज अगर स्त्री–मुक्ती का आंदोलन, स्त्री–स्वातंत्र्य आदी के बींज को फुले के बाद केवल बाबासाहब ने ही बोया है। आज की महिला ने डॉ. अम्बेडकर के विचारों को आत्मसात किया है इसी कारण आज वह हर क्षेत्र में सामने आ रही है। इस देश की पतंप्रधान इंदिरागांधी रही, एक स्त्री ने देश को चलाया यह आधिकार उन्हें केवल डॉ. अम्बेडकरके 'संविधान का और हिन्दुकोड बील का परिणाम था।

अध्यक्ष एवं पाठ्यपुस्तक समिती अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद. 500007. dr.mayadevi186@gmail.com **फोन** न. 9705999842